किसी भी विषय को प्रारम्भ करने से पूर्व उसकी रूपरेखा बनाना उचित होता है। कुछ ऐसी ही धारणा लिए मैंने भी अपने लघुशोध को विषय–सूची अनुसार भूमिका, प्रथम अध्याय व द्वितीय अध्याय में विभाजित किया है।

भूमिका के अन्तर्गत मैंने प्राचीन मानव के इतिहास को बताते हुए उसकी कला पर प्रकाश डाला है अथवा प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक कला के क्षेत्र में कलाकार की भूमिका को बताया है। जैसे–जैसे समय बदलता गया, कला में भी परिवर्तन आते गये व कलाकारों में वृद्धि हुई। इसके पश्चात् आधुनिक कला का परिचय देते हुए भारत के एक शहर केरल की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। प्राकृतिक उपादानो से भरपूर केरल, कला व संस्कृति से परिपूर्ण है। राजा रवि वर्मा जैसे प्रसिद्ध कलाकार भी यही के थे। केरल कला के क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहाँ की समृद्ध मन्दिर परम्परा है व भित्ति चित्रों का एक अनोखा संसार है। इसके पश्चात् केरल के सांकृतिक वातावरण में जन्मे बहुमुखी प्रतिभा के प्रसिद्ध कलाकार का परिचय दिया है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामचन्द्रन के जीवन का परिचय देते हुए, उनकी शिक्षा के बारे में बताया है। रामचन्द्रन के कलाकार बनने की यात्रा का वर्णन इस लधुशोध में किया है। इसके अतिरिक्त रामचन्द्रन की कला साधना में सहायक कला गुरूओं से मिली प्रेरणा को वर्णित किया है व एक सफल कलाकार बनने के बाद उनके पुरस्कार व सम्मान पर भी प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय में मैंने रामचन्द्रन के चित्र भण्डार में से कुछ चयनीत कृतियों का अध्ययन करके सचित्र–सहित उनका विस्तार से वर्णन किया है। जिसके अन्तर्गत

चित्रों की शैलीगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। रामचन्द्रन की काल्पनिक दुनियाँ में कुछ कहानियाँ व विचित्र पात्र छिपे हुए हैं। रामचन्द्रन की अभिव्यक्ति उत्कृष्ट श्रेणी की है संयोजन करने का ढंग भी अद्भुत है। इनके चित्रों में केरल शान्तिनिकेतन व राजस्थान की झलक देखी जा सकती है।

अंत में मैंने अपने लघुशोध को विराम देते हुए, कला के क्षेत्र में रामचन्द्रन की वर्तमान स्थिति को बताया है कि आज वह महत्तवपूर्ण कलाकारों में से एक हैं जिन्हें हमेशा आदर्श रूप में देखा गया है और आगे भी देखा जाएगा।

दिनांक–

शोध छात्रा